सायरन और सजगता

(काव्य-कृति)

रचनाकार

श्री भूरसिंह निर्वाण
बी० ए०, साहित्य-भूषण

सम्पादक मण्डल

श्री अम्बालाल कल्ला,
बी०ए०,एलएल०बी०

श्री दयानन्द सारस्वत,
शास्त्री, एम०ए०,एम०एस०
साहित्य मनीषी०

एवं

श्री शिव प्रताप पाण्डे

प्रकाशक —
भूरसिंह निर्वाण
७ ए, सिविल लाइन्स,
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण —
गणतन्त्र दिवस,
२६ जनवरी, १९७२

मूल्य ७ रुपये ५० पैसे

मुद्रक -दी यूनाइटेड प्रिन्टर्स एण्ड कम्पनी
राधा दामोदर जी की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर-३ (राज०)

'साधरन और सजगता' के प्राप्ति स्थान —

१ प्रमुख विक्रेता -नवयुग ग्रन्थ कुटीर, कोट-गेट, बीकानेर (राज०)

२ अन्य विक्रेता -मुक्ति प्रकाशन, बीकानेर (राज०)

चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर ३ (राज०)

दी स्टूडेन्ट्स बुक कम्पनी सोजती गेट,
जोधपुर (राज०)

[१]

स्वतन्त्र भारत

के

रजत-जय ती वप

[२]

भारत पाक सघष

मे

भारतीय सेनाग्रा की ग्रनुपम विजय,

[३]

बगला मुक्ति-ग्रा दोलन

ग्रौर

मुक्त बगला देश

[४]

बग ब धु शेख मुजीबुरहमान के स्वत त्र बगला देश के
प्रधान-मत्री पद सभालने,

एव

[५]

श्रीमती इ दिरा गा धी, प्रधान मत्री, भारत सरकार

को

"भारत-रत्न की उपाधि से विभूषित किये जाने—

की

स्मृति मे

"सायरन ग्रौर सजगता"

प्रकाशित

गणत त्र दिवस, २६ जनवरी, १९७२

सदेश

[१]

शिक्षा मत्री,
राजस्थान सरकार।

जयपुर
राजस्थान।
१० दिसम्बर, १९७१

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस सकटकालीन परिस्थिति मे जब कि हमारे जवान मोर्चों पर देश की रक्षा मे जुटे हुए हैं एव जनता नागरिक सुरक्षा के कार्यों मे सलग्न है श्री भूरसिह जी निर्वाण द्वारा रचित "सायरन और सजगता" नामक काव्य पुस्तिका (३३ कविताओ का स्वरचित सग्रह) का प्रकाशन, जनता और जवानो के मनोबल को प्रबल रखने के लिये एक बहुत ही सराहनीय कदम है।

राजस्थान सवदा वीरो की भूमि रही है और हमारे वीरो की शौय-गाथायें हमे प्रेरणा देती रही हैं।

मै श्री निर्वाण को इस प्रकाशन पर बधाई देता हूँ।

पूनम चन्द विश्नोई
शिक्षा मत्री,
राजस्थान, जयपुर।

—०—

[२]

श्री भूरसिह निर्वाण की कवितायें मैने पढी हैं। उनकी कविताओ मे राष्ट्रीयता एव ओजस्विता कूट-कूट कर भरी हुई है। म आशा करता हूँ कि उनकी यह पुस्तक "सायरन और सजगता" भारतीय नागरिका मे जागरण एव वीरता का नव सदेश देगी।

दिनाक, १७ नवम्बर, ७१

जी० रामचन्द्र
जिलाधीश, बीकानेर

सदेश

शिक्षा मत्री, [१] जयपुर
राजस्थान सरकार । राजस्थान ।
१० दिसम्बर, १९७१

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस सकटकालीन परिस्थिति मे जब कि हमारे जवान मोर्चों पर देश की रक्षा मे जुटे हुए है एव जनता नागरिक सुरक्षा के कार्यों मे सलग्न है श्री भूरसिह जी निर्वाण द्वारा रचित 'सायरन और सजगता" नामक काव्य पुस्तिका (३३ कविताओ का स्वरचित सग्रह) का प्रकाशन, जनता और जवानो के मनोबल को प्रबल रखने के लिये एक बहुत ही सराहनीय कदम है।

राजस्थान सदा वीरो की भूमि रही है और हमारे वीरो की शौर्य-गाथायें हमे प्रेरणा देती रही हैं।

म श्री निर्वाण को इस प्रकाशन पर बधाई देता हूँ।

पूनम चन्द विश्नोई
शिक्षा मत्री,
राजस्थान, जयपुर।

—०—

[२]

श्री भूरसिह निर्वाण की कवितायें मैंने पढी हैं। उनकी कविताओ मे राष्ट्रीयता एव ओजस्विता कूट-कूट कर भरी हुई है। म आशा करता हूँ कि उनकी यह पुस्तक "सायरन और सजगता' भारतीय नागरिको मे जागरण एव वीरता का नव-सदेश देगी।

दिनाक, १७ नवम्बर, ७१ जी० रामचन्द्र
जिलाधीश बीकानेर

॥ श्री ॥

राजस्थान का सुप्रसिद्ध

हिन्दी विश्वभारती शोध सस्थान, बीकानेर

निर्देशक बीकानेर
विद्यावाचस्पति, मनीषी, दिनाक २२-११-७१
विद्याधर शास्त्री, एम० ए०

साहित्यकार श्री भूरसिंह जी निर्वाण का प्रत्येक वाक्य जीवन की गहन अनुभूति और स्वाभाविक सत्प्रेरणा के स्रोत से सम्पन्न होता है। आप राष्ट्र की प्रत्यक गति विधि के मौलिक कारणो के अन्वेषकार और प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट विचारधारा के सहज परीक्षक हैं। इन विशेषताओ के अतिरिक्त आपकी सबसे अधिक स्वागताह विशेषता यह है कि आप देशकालानुसार राष्ट्रमानस मे अपेक्षित नव स्फूर्ति और शक्ति के सचार की अपूर्व क्षमता रखते हैं। धधकती आग," 'दृढ प्रतिज्ञ मुजीब,' 'याहया को हिदायत', 'रणककण' "बोलकवि', 'कौन चकनाचूर होता", और 'लाल बहादुर शास्त्री', प्रभृति आपकी कविताओ के पान्चजन्य से उद्घोषित सायरन और सजगता' नाम से प्रस्तुत आप के इस अर्वाचीनतम कविना प्रकाशन की प्रत्येक कविता आपकी इस सहज प्रेरक शक्ति को उदभासित करती है। राष्ट की वतमान स्थिति ने आपके इस काव्य को और भी अधिक शक्तिसम्पन्न कर दिया है। मिथ्या प्रशसा अथवा अनावश्यक अलकरण की अपेक्षा आप अपने कथ्य को सहजगम्य, सीधे शब्दो मे अभिव्यक्त करते हैं और आप का व्यग तीखा होकर भी असह्य नही होता और सदा एक नये कतव्यबोध का जनक होता है। म आप की शृखलाबद्ध भावलहरी और आपकी प्रत्येक बात पर एक नये विचाराकुर को विभावित करने वाली तुकस्रक् (माला) से सदैव प्रभावित होता रहा हूँ। मेरा दृढ विश्वास है कि आप के इस "सायरन' से राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के हृदय मे सजगता उत्पन्न होगी और वह अपने कर्त्तव्य पालन की दिशा मे अग्रसर होगा।

विद्याधर शास्त्री
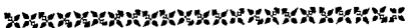
ठा० श्री भूरसिंह जी निर्वाण का कविता सग्रह 'सायरन और सजगता' मने ध्यान से पढी । इस से पहिले उन के मुख से इन मे स कई कविताएँ म सुन चुका हूँ और उनका आन द ले चुका हूँ । मने यह अनुभव किया है कि उनकी कविताओ मे अनोखी सूझबूझ रहती है और शब्द चयन की विशेषता रहती है । उनकी शब्द योजना बडी सु दर है । ये कविताएँ देश भक्ति पूण है और भारत की स्वाधीनता की रजत जय ती वष मे प्रकाशित की जा रही है ।

इन मे मे बहुतसी कविताऐ तो राजस्थान के अनेक समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो चुकी हैं । इन की कविताऐ —

(१) राष्ट्र के नौनिहाल के प्रति (२) याहया खा को हिदायत (३) राष्ट्र निष्ठा (४) उद्बोधन एव ५) रणककण, मुझ को बहुत अच्छी लगी और मुझे आशा है कि अ य पाठको को भी अच्छी लगेंगी । वसे कविताएँ तो इस सकलन की सभी अच्छी हैं या यो कहिये की एक से एक बढकर हैं ।

यह भाव कितना सु दर है –

'चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे ।
मेरा भारत रहे, आजादी रहे ॥

देश भक्ति के भाव इस से अधिक क्या सु दर हो सकते हैं ?

ठा० श्री भूरसिंह जी का हृदय सदा से ही देश प्रेम से ओत प्रोत रहा है । हृदय में जैसे भाव होते हैं, वे ही कविता रूप मे प्रगट होते हैं। इनकी कविताओ की यदि म प्रशसा करने लगू तो यह केवल सम्मति नही रहेगी ।

(ठा०) रामसिंह एम०ए०
भू०पू० डाईरेक्टर, शिक्षा विभाग, राजस्थान
अध्यक्ष,
सादू ल राजस्थानी रिसच इ सटीट्यूट,
बीकानेर

पचवटी,
मेजर पूरण सिंह माग,
बीकानेर (राजस्थान)
२२–११–७१

[३]
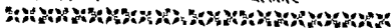
श्री भूरसिह रिर्वाण की कृति "सायरन और सजगता' को आद्योपात पढने का सुअवसर प्राप्त हुआ। रचनाएँ सामयिक सदर्भों से युक्त एव राष्ट्रीय भावनाओ से ओतप्रोत हैं।

आज देश को जिन विकट समस्याओ का सामना करना पड रहा है कवि उनके प्रति पूर्णतया सजग है। नागरिको को राष्ट्र के प्रति निष्ठावान बनाने तथा उनके मनोबल को उन्नत करने का दोहरा दायित्व लेकर कवि ने 'सायरन के माध्यम से जागरण का मत्र फूकने का प्रयास किया है।

भाषा सहज, सुग्राह्य एव प्रवाहमय है। सप्रेषण की समस्या कही भी नही आती। शिल्प की दृष्टि से भी काव्य शिथिल नही है— उचित कसावट एव मार्मिक शब्द-चयन से सकलन की कविताओ मे अधिक रोचकता आ गई ह।

श्री भूरसिह सोद्देश्य लेखन के पक्षधर है। अत इनका मतव्य श्रोताओ अथवा पाठको को निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर लेजाना रहता हैं। मात्र आनद की अनुभूति करवाने अथवा अभाव अभियोगा एव निराशा जन्य कुण्ठाओ को उजागर करने का प्रयास इनके काव्य म नही मिलता। वे आशावादी हैं और किसी लाइट हाउस की तरह भटके हुए जहाजो को नई दिशा देते प्रतीत होते हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य मे ऐसे ओजस्वी स्वरो वाले कवि की रचनाओ का सवत्र स्वागत होगा—ऐसी आशा की जा सकती है।

बीकानेर
दिनाक, २३-११ ७१

भवानी शकर व्यास
विनोद

श्री भूरसिंह जी निर्वाण की कविता संग्रह का नाम "सायरन और सजगता" सुंदर है। इसके मुख पृष्ठ पर सीमा एवं नागरिक सुरक्षा के साधनों का समन्वय और उनका सजग दिखाया जाना प्रभावोत्पादक है। कवि का स्वयं का वक्तव्य तर्कसंगत होने से उत्साह-वर्धक एवं प्रेरणादायक है। कविताओं के शीर्षक उपयुक्त तथा सारगर्भित हैं। लगभग सभी रचनाएँ समयानुकूल, मर्मस्पर्शी एवं लक्ष्य भेदी हैं। भाषा सरल होने के कारण कवि की राष्ट्र-प्रेम की भावनाएं साधारण जनता तक आसानी से पहुँचने वाली हैं। हास्य का पुट होने से कुछ कविताएं रोचक हो गई है एवं उपयुक्त स्थानों पर ऐतिहासिक तथ्यों का समावेश किये जाने से कविताओं में निखार आ गया है।

संघर्षमय जीवन में कवि आशावादी है और यही संदेश जनता तक पहुँचाना उनका उद्देश्य है।

आपका प्रयास प्रशंसनीय है। सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

बीकानेर,
दिनांक २५-११ ७१ ई०

डा० (कुमारी) पद्मजा शर्मा
लैकचरार,' इतिहास विभाग
डूंगर कालेज, बीकानेर।

[५]

मेघराज मुकुल,
शासन उप सचिव

जयपुर (राजस्थान)
दिनाक, ६ दिसम्बर, १९७१

राजस्थान के प्रसिद्ध कवि श्री भूरसिंह जी निर्वाण द्वारा लिखित काव्य 'सायरन और सजगता' देखने को मिली। जसा कि पुस्तक के नाम से स्पष्ट है, इस मे देश भक्ति से ओतप्रोत कविताय तो हैं ही, वतमान सकट कालीन प्रसग मे भी, इस पुस्तक मे सम्मिलित ऐसी जोशीली कविताऐं हैं जो सभी स्तर के पाठको मे सजगता की प्रेरणा फूक सकेंगी।

श्री भूरसिंह जी निर्वाण राजस्थान के जान माने प्रौढ कवि हैं और उनकी कविताओ से हृदय की सच्ची भावनाओ का उद्रेक होता है। सायरन और सजगता पुस्तक मे सम्मिलित इन रचनाओ मे ओजपूर्ण किन्तु सरल भाषा का समावेश किया गया है ताकि उनकी सहज अभिव्यक्ति को पाठक बिना परिश्रम के ग्रहण कर सकें। कही कही पर चुटीले व्यग हसी का फव्वारा छोडते जाते हैं, जिस से साहित्यिक मनोरजन भी पर्याप्त मात्रा मे होता है।

मुझे आशा है कि श्री निर्वाण ऐसी ही और अधिक काव्य रचनायें देकर, जन-साधारण को देश-भक्ति के लिये प्रेरित करते रहेंगे।

मेघराज मुकुल
६-१२-७१

पिछले तीस वर्षों से मैं श्री भूरसिंहजी निर्वाण की काव्य रचना से परिचित हूँ और कई बड़े बड़े रगमचो पर उन्हें अन्य प्रमुख कवियों के साथ निरन्तर सुनता रहा हूँ। काव्य पाठ करते समय श्री भूरसिंहजी कविता की भावनाओं के साथ एकाकार हो जाते हैं और वीररस के काव्य-पाठ के समय तो ऐसा लगता है कि जैसे कोई जुझार युद्ध के मैदान मे जूझ रहा हो।

हिंदी कविता मे पिछले दो दशकों मे कई नए तूफान आए हैं और नए प्रयोगों के नाम पर काव्य की शास्त्रीय परम्पराओं को जैसे भुला ही दिया गया है। ऐसे समय में श्री भूरसिंहजी निर्वाण जैसे थोड़े कवि ही हैं कि जो भारतेन्दु काल से चली आने वाली काव्य-परम्पराओं का अपने सृजन मे ज्यों का त्यों सुरक्षित रखा है।

यह प्रसन्नता की बात है कि स्वतन्त्र भारत को रजत जयंती के वर्ष मे 'सायरन और सजगता' के नाम से श्री भूरसिंह जी की ३३ कविताओं का सकलन प्रकाशित हो रहा है। इस सकलन मे इनकी अधिकाश राष्ट्रीय कविताओं का समावेश है। लेकिन श्री भूरसिंहजी तो सभी रसों मे पूरे अधिकार से लिखते रहे हैं, अत इस सकलन मे ही उनके द्वारा सृजित करीब-करीब सभी रसो का थोडा बहुत रसास्वादन पाठकों को हो ही जायगा। फिर भी इस सकलन मे उनकी 'राष्ट्र निष्ठा', 'रणकंकण', 'उद्बोधन', 'तूफान' और सघर्ष तथा 'किसकी कुर्सी' आदि कवितायें निश्चय ही लोकप्रिय होंगी

प्रकाशन के लिए भूरसिंहजी की यह पहली काव्य कृति है। उनके सृजित काव्य के प्रकाशन का यह क्रम निरन्तर आगे बढे और उनके काव्य का समाज मे समुचित मूल्यांकन हो तथा समाज उनके काव्य को समुचित मान्यता देगा, यही कामना है।

सुमनेश जोशी

जयपुर दिनांक १४ १२ ७१

भूरसिंघ निरवाण री, कविता भाव विभोर।
सम्मत्ति सवाई के देवे ? काव्य काळज कोर॥

जयपुर, —सेखावत सवाई सिंघ धमोरा
१५ जनवरी, १९७२ ई०

प्रस्तावना

विष्णुदत्त शर्मा, सदस्य, अजमेर (राजस्थान)
पब्लिक सर्विस कमीशन,
(राजस्थान)

श्री भूरसिंह जी "निर्वाण" की यह छोटी सी काव्य पुस्तिका "सायरन और सजगता" देश की सजग आत्मा के प्रति उनकी श्रद्धांजलि है।

सन् ७१-७२ के वर्ष को उन्होंने स्वतन्त्रता की "रजत जयन्ती" का वर्ष कहा है। यह रजत-जयन्ती 'फौलाद-जयन्ती' के रूप में मन रही है। वीर-देश के लिए यह उपयुक्त ही है।

"सायरन और सजगता" वक्त की आवाज है-युग का स्वर है। स्वतन्त्रता की देवी बलिदान मांगती है-उसके उपासक बलिदान देने में एक दूसरे से होड लगाते हैं। उन्ही बलिदानियों के सम्मान में श्री निर्वाण ने अपनी यह काव्य मालिका गूंथी है जिस में परम्परागत मान्यताओं के अनुसार काव्य कला चाहे उतनी न हो, पर वीर-दर्प से भरे हुए और उद्बुद्ध चेतना पूर्ण हृदय की वाणी है।

राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण ने कहा था —

"जय देवमंदिर देहरी,
सम-भाव से जिस पर चढी
नृप हेम-मुद्रा और रंक कपर्दिका

गुलाब और बेले के फूल विलास मंदिरों की शोभा बढाते हैं पर रण के देवता प्रलयंकर शंकर पर कांटेदार धत्तूर के पुष्प चढते हैं वैसे ही निर्वाणजी की यह कविता मातृ-मंदिर में पूजा के रूप में स्वीकार होगी-ऐसी मेरी आशा है।

अजमेर, विष्णुदत्त शर्मा
ता ५-१२-७१

प्राक्कथन

"सायरन और सजगता' श्री भूरसिंह निर्वाण की काव्य कृति है श्री निर्वाण जी की कविताएँ मैं अपने बचपन से सुन रहा हूँ।

श्री निर्वाण का व्यक्तित्व शुद्ध भावना से ओत प्रोत व्यक्तित्व है अत उनकी कविता मे सीधा वह व्यक्त होता है जो भावनात्मक प्रतिक्रिया के आधार बनाता है। उनकी कविता मे बौद्धिक विलास को कोई स्थान नही है। जगह जगह साधारण आदमी के मुहावरे मे चुटीला व्यग्य भी इन कविताओ का अपना विशेष गुण है। आज जब कविगण आस्था और अनास्था के बीच किसी अनवस्था से उबरने की कोशिश मे लगे है, ५८ वष से ऊपर उम्र प्राप्त श्री निर्वाण अदम्य साहस और वीरता के गात उसी सहज भाषा मे गा लेते हैं यह कम नही है। "देश के नौनिहालो के प्रति' कविता हमारी नौजवान पीढी के लिए अत्यत प्रेरणास्पद है।

श्री निर्वाण हमारे प्रान्त के सब श्री उस्ताद, सुमनेश जोशी, गणपतिचन्द्र भण्डारी आदि के समय के कवि हैं। वे उस समय भी सहज और मोहक होकर अपना कविता पाठ उसी जोश और साहस से करते थे जसा आज करते है। सच तो यह है कि श्री निर्वाण शुद्ध रूप से हृदय ही हृदय हैं।

जहाँ हिन्दी की कविता कई वादो के घेरे मे घूमती रही है श्री निर्वाण ने अपनी कविता को अपने हृदय और सीधेसादे अनुभवो और व्यग्यो से बाहर नही जाने दिया है।

राजस्थान से श्री निर्वाण को असीम मोह है। उनके 'ठूठा वाले दश" मे यही, मोह व्यक्त हुआ है। मरू प्रदेश के बीच खडे ठूठो से मरू प्रदेश का स्वरूप हृदयगम कर श्री निर्वाण ने रचना की है, यह आज भी सच है। म श्री भूरसिंहजी निर्वाण के काव्य सग्रह 'सायरन और सजगता की सफलता की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि जनता इस सग्रह का हृदय से आदर करेगी।

जयपुर,

दिनाक १५-१२-७१

तारा प्रकाश जोशी

'चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें
मेरा भारत रहे आजाद रहे'

वडा ही प्रेरणादायक बन पडा है ।

श्री निर्वाण न केवल साहित्यिक ही हैं, अपितु सेवा निवृत्ति के बाद अनेक प्रवृत्तियो के प्रेरक बन कर अपने अनुभवो को अपनी कविताओ मे स्थान देना नही भूले हैं और 'सौ बातो की एक बात' मे दम्पत्ति अध्यादेश निकलवाने को आज भी बडे ही आतुर हैं।

उनकी भाषा चुस्त चलती हुई हिन्दी है जिसमे कृत्रिमता के लिए स्थान नही है । भाषा की सफलता उनकी कविताओ को अधिक हृदयगम् एव आकर्षक बना देती है । अलकारो और मुहावरो का यत्र-तत्र आवश्यकतानुसार स्वाभाविक रूप से समावेश किया गया है । गांधीजी के लिए 'सूरज" और देशवासियो के लिए 'सूरजमुखी' की उपमा कितनी यथार्थ और उपयुक्त है —

एक सूरज
और
करोडों सूरजमुखी
जिधर घूमता था
उधर ही घूम जाते थे

कृषक की सफलता का रहस्य समय पर बीज बो देना है । "वक्त के बोये मोती उपजते हैं-' कृषको मे प्रचलित यह लोकोक्ति श्रीमती इन्दिरा गाधी पर कितनी सुन्दरता से घटित होती है यह सामयिक घटनाओ की जानकारी रखने वाले सभी जानते हैं । बगला देश को मान्यता देने के प्रश्न पर सरकार की ओर से बराबर यही कहा जाता रहा कि समय आने पर मान्यता दे दी जायगी । यह सभी जानते हैं कि किस उपयुक्त समय पर मान्यता दी गई और उसके कितने सुन्दर परिणाम सामने आये ।

श्री निर्वाण लिखते है—

राजनीति मे नीति निपुण तू, मोती की तू पोती है
वक्त बुहाई कर देती है, उपज माणक मोती है"

राजस्थान की धोरो की धरती मे, जहा पग पग पर प्रकृति के साथ सघर्षमय जीवन व्यतीत करना पडता है—उस जीवन का दिग्दर्शन ठूठो वाले देश' नामक कविता मे कराया गया है। कही राजस्थानी वीर शहरी वातावरण मे अपने मूल को न भूल बैठ इसीलिए पृथ्वी पाताल हिलाकर शोणित से खेले जाने वाले फाग की याद दिलाकर प्राणो को हथेली पर रखकर दुनिया को अपनी वीरता दिखाने के लिए प्रोत्साहन देना कवि नही भूलते है। इस कृति को जब आसाम, बगाल अथवा हिमालय की तराई मे रहने वाले व्यक्ति पढग तब वे अपने का मरु-प्रदेश मे विचरण करते हुए अनुभव करेंगे।

इस कृति का एक उदाहरण प्रस्तुत है —

तूफानी कुटिल कुचालो मे
ओल — पाले भूचाला मे,
फिर भी यह ठूठ अटूट रहे,
है इनकी जड पातालों मे,
कीली ज्यों मस्तक शेषनाग,
है ठूठो वाले देश जाग''

प्रस्तुत सग्रह मे देश प्रेम और जागृति मे ओत प्रोत कृतिया की बानगी देखते ही बनती है —

× × ×

जा निसारी जानते हैं सर हथेली पर लिए।
मैं वतन क वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए।।

× × ×

आजादी की लहर बम्मों से कभी रुकती नहा।
जो भभकती आग है वह आग से बुझती नहीं।।

× × ×

देश प्रेम के दीवाने बन देश जाति पर बलि हो जाओ।
मातृ भूमि के परवाने बन, निज प्राणों को भेंट चढ़ाओ॥

× × ×

समाजवाद और समानता का सुहावना स्वप्न कवि के शब्दों मे किस प्रकार साकार होकर उभरता है देखिये —

नहीं शिकायत रहे किसी को
हमें मिले पूरी हाला।
साकी वह भरपूर पिलाकर,
करे प्रेम से मतवाला।
दीन धनी हिंदू—मुस्लिम सब
बन प्रेमी पीवें प्याला।
उन्नति करती बनी रहे
आजाद हिंद की मधुशाला।

पाकिस्तान की आक्यूपेशन आर्मी के परिपेक्ष्य मे बंगला देश की आवाज कवि से पूछती है —

'किसकी कुर्सी काबिज कौन ?
बोल कवि ! क्यों साधे मौन !'

इसका सीधा साधा उत्तर कवि ने किस रोचक ढंग से निम्न लिखित पंक्तियो मे दिया है —

"जब टाइम आयेगा तेरा
बजे जीत का डंका तेरा
तभी बंधेगा तेरे सेहरा
भूमि होगी, डेरा तेरा
तभी बदलना अपना टोन
सोच समझ कवि रहता मौन।"

कवि ने संघर्षमय वातावरण मे जहां 'तूफान और संघर्ष' के गीत गाये है वहां 'राष्ट्र के प्रति निष्ठा", 'अनुभूतियां", जीवन दीप', भारतीय नारी के प्रति" अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए

राष्ट्र के नौनिहालो को जा जागृति का सदेश दिया है वह अ धकार मे प्रकाश स्तम्भ के समान है। 'इतिहास बोलता है", "ईट का जवाब पत्थर" 'प्यारी कहानी" आदि रचनाए तो मुह बोलती हुई तस्वीरें ह।

जन जीवन मे मनुष्य चाहे कितना ही व्यस्त रहे वि तु कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं जब सब कुछ भूल कर वह अपने मन मे शाति अनुभव करता है, उस क्षण की प्रेरणा एव मन मे गुदगुदी उत्पन करने के लिए कवि ने अपनी कविताओ मे हास्य रस को प्रस्फुटित कर अपने हृदय की एक और कडी जोडी है जो पुस्तक के कलेवर को एक नया रूप दे रही है। 'कलदार के चमत्कार से कौन चमत्कृत नही है। शायरो पर शेर" लिखते हुए जहा काका की दाढी को यू एन ओ के सग्रहालय मे रखने का सुझाव दिया है, वहाँ कवि अपने साफे का अपने 'प्यारे वेश मे सटकाया जाना भी नही भूले हैं।

श्री भूरसिह जी अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखते हुए भी हम लोगो को अपने प्रेरणा रूपी सायरन बजाते हुए सपादन के लिए सजग करते रहे हैं वह इस साहित्यिक कृति **सायरन और सजगता** की एक नई सजगता रही है। इसके लिए हम उन्ह किन शब्दो मे ध यवाद दें?

अत मे हम श्री ताराच द जी वर्मा को ध यवाद देना अपना कतव्य समझते हैं, जि होने अपने व्यस्त कायक्रमो मे सजग रह कर सायरन की आवाज का सजग रखा है।

यद्यपि पुस्तक के प्रूफो मे सावधानी वरती गई है, फिर भी यदि कोई सामा य त्रुटि रह गई हो तो पाठक गण उसे शुद्ध करके पढने की कृपा करेंगे।

वस त पचमी,	अम्बालाल कल्ला
२१ जनवरी, १६७२	दयान द सारस्वत
जयपुर (राजस्थान)	शिव प्रताप पाण्डे

स्वय

की
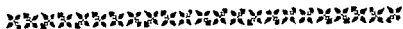
ओर

से

सायरन' तो 15 अगस्त, 1947, जिस दिन भारत स्वतन्त्र हुआ, उसी दिन से बजने प्रारम्भ हो गये और चूकि इस स्वतन्त्र राष्ट्र के नौजवानो ने भारत की स्वतन्त्रता की रक्षा करने की शपथ ली है, इसलिये भारत हमेशा सजग और सतर्क रहता ही रहेगा।

स्मरणीय रहे कि पोला के खेल के घोडो को प्रतिदिन मैदान मे दौडा कर उतना ही व्यायाम कराया जाता है, जितना वास्तविक खेल मे हुआ करता है, चाहे पालो का खेल साल मे एक बार ही खेला जाय।

भारत को 'सोने की चिडिया' कहा गया है। वास्तव मे मेरा देश, जिस देश की मिट्टी सोना उगलती है, हीरे मोती उगलती है अवश्य ही सोने की चिडिया है। इसीलिये तो विश्व के कुछ राष्ट्र अपने आर्थिक एव राजनैतिक लाभ के लिये, अवसर की तलाश मे इस देश की तरफ ताक लगाये रहते हैं। यह कोई नई बात नही है —

"Serpents hiss where there is green'

'जहा हरियाली होती है, वहा साप फुसफुसाया ही करते है।"

सन् 1971-72 का वष

(1) भारतीय जनतन्त्र के चुनावो मे अद्वितीय सफलता, (2) गरीबी मिटाने एव समाजवाद लाने का सकल्प, (3) स्वतन्त्र भारत का 25 वा अर्थात् रजत जयन्ती वष, (4) पूर्वी बगाल मे चुनाव के दगल मे जनता की अभूतपूव विजय, (5) शेख मुजीबु रहमान की चुनावो मे भारी बहुमत से जीत और जनतन्त्र को दफनाने

के लिये सदर याहया खाँ द्वारा पूर्वी बगाल की जनता पर नृशस अत्याचार, (6) तीस लाख व्यक्तियो को मौत के घाट उतारना, (7) लगभग एक करोड शरणार्थियो को भारत मे धकेल कर प्रच्छन्न आक्रमण करना, (8) प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी का सयुक्त राष्ट्र सघ के सदस्य देशो के सम्मुख भारतीय दृष्टिकोण का प्रतिपादन करना (9) आजाद बगला देश के आन्दोलन का जोर पकडना, (10) मुक्ति वाहिनी द्वारा पाक फौजो के नाक म दम करते हुए निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर होना, (11) पाक तानाशाह का बौखला कर यह कहते हुए कि यह सब भारत की शरारत है, अपनी बरनरत्र द डिवीजनो को हमारी सीमा पर ला कर खडी कर देना, (12) फलस्वरूप भारतीय सेनाओ का देश की सुरक्षा के लिए अपनी सीमा पर जमाव, (13) पाक का 3 दिसम्बर 1971 को भारतीय सीमाओ पर अचानक आक्रमण, (14) आजाद बगला देश को भारत की ओर से सवप्रथम मान्यता दिया जाना (15) 3 दिसम्बर से 16 दिसम्बर अर्थात् 14 दिन तक घमासान युद्ध, (16) 16 दिसम्बर का पाक सेना द्वारा बगला देश मे आत्म समपण कर देना। (17) उसी दिन भारत की ओर से युद्ध बन्द कर देने की घोषणा। (18) भारत के सही दृष्टिकोण को समझकर हमारे सच्चे मित्र-राष्ट्र "रूस' का सयुक्त राष्ट्र सघ मे तीन बार बीटो के अधिकार का प्रयोग कर साम्राज्यवादी शोषक एव तानाशाही शक्तियो पर कुठाराघात करना, (19) शेख मुजीबुरहमान को पाकिस्तान की हिरासत से रिहा करा कर स्वतन्त्र बगला देश के शासन की बागडोर सभलवाना—इन सभी घटनाओ का इसी वष मे होना—यह एक सयोग ही कहा जायेगा।

एक प्रश्न है — क्या कारण है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'

हजारो वर्षों से भारत ने सहस्रो उतार-चढाव देखे हैं। उसकी सभ्यता और सस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। विश्व के अनेक राष्ट्र, जो उन्नति के शिखर पर पहुँच चुके थे आज उनके अस्तित्व का पता नही है।

उत्तर सीधा साधा है। यह भारत तपो भूमि है, ऋषि मुनियो का देश है, धर्म प्रधान एव कर्म प्रधान देश है। त्याग और बलिदान करने वालो का देश है। जीते जी इट और के साथ दीवारो मे चुना जाना, किवाडो पर लगे हुए बडे-बडे लोहे की कीलो से अपना शरीर सटाकर, हाथियो के द्वारा छिदवा कर, अजेय दुर्ग के द्वार खुलवा कर विजय प्राप्त करना, अपने सगे पुत्र को महाराणा का पुत्र बता कर, अपने सामने सिर से धड अलग होते देख कर उफ तक नही करना, पति को रणक्षेत्र मे प्रोत्साहित करने के लिये सनाणी के रूप मे अपना सिर काट कर दे देना, मौत को हथेली मे बन्द कर राडार पर हमला करके तत्काल स्वाहा हो जाना, टैंको को तबाह करने के लिये बम विस्फोट के साथ साथ अपने प्राणो का विस्फोट कर देना, भारत के नौजवानो का उडान भरकर, मौत से मुकाबला करते हुए "मौत को ही मौत के घाट उतार देना', या मौत से मुकाबला करते हुए अमर शहीद हो जाना –इस प्रकार से अपना शौर्य और वीरत्व दिखाकर मर मिटने वालो का देश है।

भारत अपने आप मे एक मर्यादा है, एक परम्परा है, एक सभ्यता है और एक सस्कृति है, दानवता पर मानवता की विजय है। अपनी सारी शक्ति लगा कर बगला देश का स्वतन्त्र करा कर भारत द्वारा वहीं के नुमाइन्दा को शासन सौंप देना, विश्व के इतिहास मे एक अनोखी घटना है—ऐसा है मेरा देश, मेरा राष्ट्र और यही कारण है कि "हस्ती मिटती नहीं हमारी

"सायरन और सजगता' की कविताओ मे ऐसे ही कुछ विचारो का समावेश है। "सायरन" एक प्रकार से सजग रहकर आगे बढने का प्रतीक है। यह क्रान्ति का द्योतक है चाहे वह राजनतिक औद्योगिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक बौद्धिक या हरित क्रान्ति क्यो न हो। अतएव सायरन और सजगता स्थाई गूज है, वक्त की आवाज है। इन कविताओ मे अधिकतर वे कविताए है जो राष्ट्रीयता से सम्बन्धित है। कुछ शाश्वत सत्य के रूप मे है, तो कुछ मे सामयिक

पुट दिया गया है तथा कुछ समय की पुकार के साथ लिखी गई हैं। आवश्यकतानुसार कुछ कविताएं छोटी भी कर दी गई हैं।

साहित्यिक, कवि एवं विद्वान पाठकगण ही कवि" के लिये दर्पण प्रस्तुत करते हैं, जिसमें कवि अपनी कविताओं की भावनाओं का प्रतिबिम्ब देख सकता है। ऐसे ही महानुभावों ने मेरा उत्साह बढ़ाया है और काफी अर्से से उनका प्रेमपूर्ण आग्रह रहा कि कुछ *कविताओं के संकलन का प्रकाशन तो मुझे करवा ही देना चाहिये।* मैं उन सब महानुभावों जिन्होंने इस शुभ कार्य में मेरा हौसला बढ़ाया है अथवा कविताओं के सम्बन्ध में सही सुझाव दिये हैं के प्रति अपना आभार प्रगट करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

विशेष रूप से —

जयपुर—शासन सचिवालय

सर्व श्री —

(१) चन्द्रभानु गुप्ता, उप शासन सचिव
(२) राधेकान्त शर्मा, उप विकास आयुक्त, विकास विभाग
(३) श्रीनाथ चतुर्वेदी उप शासन सचिव
(४) गौरीशंकर गोस्वामी, उप शासन सचिव
(५) मूलचन्द व्यास, अनुवादक विधि विभाग,
(६) कमलाकर फडके, अनुवादक विधि विभाग

जयपुर—अन्य

(१) हरिसिंह चौधरी अध्यक्ष राजस्थान नहर परियोजना
(२) माणकलाल कानूगा सहायक मुख्य निर्वाचन अधिकारी
(३) एम०एल०सोलंकी प्रिंसिपल राजकीय कालेज कालाडेरा
(४) डा० जबरसिंह, लक्चरार, राजस्थान विश्वविद्यालय
(५) छत्रपति सिंह सहायक निदेशक जन सम्पर्क निदेशालय
(६) *शिशोदिया सुल्तानसिंह, प्रसार अधिकारी परिवार* नियोजन आकाशवाणी

(७) नाथूसिंह राठोड सहायक ब्रान्च मैनेजर जीवन बीमा निगम, मिरजा इस्माइल रोड

(८) एम०एल० राठौड ए०जी० ग्राफिस

जोधपुर

(१) एम०एल० महेचा रिटायड एडीशनल कमिश्नर,

(२) डा० करणसिंह पवार प्रोफेसर जोधपुर विश्वविद्यालय

(३) डा० श्यामसिंह तवर लैक्चरार राजकीय कालेज, जालौर,

(४) जीवन सिंह महेचा अतिरिक्त मजिस्ट्रेट, पाली,

बीकानेर

(१) मोहम्मद उस्मान आरिफ मेम्बर राज्य सभा

(२) विपिनबिहारी माथुर ट्रेजरी आफीसर

(३) सुरपति सिंह एडवोकेट

(४) पूनमचद खडगावत, एडवोकेट

(५) किशोरीवल्लभ गोस्वामी एडमिनिस्ट्रेटर परिवार नियोजन

(६) सावल राम गुप्ता, सहायक पुस्तकाध्यक्ष राजकीय पुस्तकालय

(७) केसरी सिंह, टी०टी०ई० रतनगढ,

कोटा

(१) डा० फतेहसिंह रिटायड प्रिंसिपल,

(२) डा० ब्रह्मदत्त शर्मा, अध्यक्ष इतिहास विभाग, राजकीय कालेज

अजमेर

(१) मोडसिंह गौड कार्यालय अधीक्षक, रेलवे

(२) सम्पतसिंह गहलोत अध्यापक राजकीय स्कूल

(३) कानसिंह निरवाण, स्टोर कीपर राजस्थान रोडवेज

(जयपुर)

म उन सब महानुभावो के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करना नही भूल सकता जिन्होने अपने बहुमूल्य सन्देश सम्मतियाँ प्रस्तावना और प्राक्कथन लिख कर मेरा मान बढाया है।

'सायरन और सजगता" के सपादक-मण्डल के सदस्यो का म बहुत ही आभारी हूँ, जिन्होने अनेक कायक्रमो मे व्यस्त होते हुए भी मेरी इस पुस्तक क सपादन का काय हाथ मे लेकर एव अपनी ओर से आमुख लिखकर, इसके प्रकाशन के काय मे पूण रूपेण सहयोग दिया है।

अन्त मे मै, दी युनाइटेड प्रिन्टस एण्ड कम्पनी एव उनके स्टाफ को, अवश्य धन्यवाद देना उचित समझता हूँ जिन्होने इस काव्य कृति को सर्वांग सुन्दर बनान मे सहयोग दिया है।

जय भारत

भूरसिह निर्वाण

दिनाक २६ जनवरी, १९७२

७ ए, सीविल लाइन्स बीकानेर

कम्प जयपुर, बी० १११
सोलकी सदन, तिलकनगर
जयपुर-४
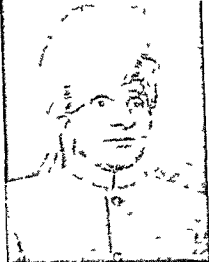
श्री भूरसिंह निर्वाण

पुत्र –श्री० ठा० चिमन सिंहजी निरबाण (किलेजात पल्टन), जयपुर
जन्म –१८ अगस्त १९०६, जयपुर
शिक्षा –बी० ए० (१९३१ आगरा विश्वविद्यालय), महाराजा कालेज, जयपुर
अध्यापन-काय –१९३१ से १९४१ (जयपुर जोधपुर बीकानेर)
अलसीसर मिडिल स्कूल, जयपुर (३१–३२) नोन्लस मिडिल स्कूल, गोनेर जयपुर (३२–३३)
प्रधानाध्यापक –श्री० रघुनाथ मिडिल स्कूल, रतनगढ (३३–३७)
सहायक प्रधानाध्यापक –श्री० रघुनाथ हाई स्कूल, रतनगढ (३७–३९)
सहायक अध्यापक –उम्मेद मिडिल स्कूल, जोधपुर (३९–४१)
कमचारी –शासन सचिवालय (महकमा खास), जोधपुर (४१–४९)
कमचारी –शासन सचिवालय राजस्थान, जयपुर (४९–६७)

(१) अन्य प्रवृत्तियां –रतनगढ ऋषि कुल ब्रह्मचर्याश्रम के प्रधानाध्यापक एव अध्यापको के सम्पक से साहित्य की ओर रुचि एव चूरु कवि सम्मेलन (१९३७) से प्रेरणा प्राप्त कर कविता लिखना प्रारम्भ। लगभग १०० कविताओ का सृजन
(२) सपादक – 'मारवाड शिक्षक जोधपुर (१९३९–४१)
(३) हिन्दी प्रचारिणी सभा, जोधपुर की स्थापना एव प्रगति कार्यों में निरन्तर सहयोग।
(४) जोधपुर महकमा खास कमचारी सघ के कमठ कायकर्ता
(५) शासन सचिवालय, राजस्थान जयपुर कमचारी सघ की काय कारिणी के सदस्य
(६) शासन सचिवालय राजस्थान, जयपुर के स्टाफ कौंसिल के निर्वाचित सदस्य (६४–६७)
(७) राजस्थान स्टेट पेन्शनस एशोसियेशन, जयपुर के सयुक्त मत्री।
(८) सायरन और सजगता (काव्य-कृति) का प्रकाशन–जनवरी, १९७२

सायरन

और

सजगता

२०] (६)

अनुक्रमणिका

ग्रन्थ धारण	पृष्ठ

सायरन

सायरन बजते रहेंगे, सावधान!
गाफिल रहने का नहीं अब, प्रावधान!
याद रखो, हिन्द अब आजाद है!
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान!

११

सायरन और सजगता

(१)

सायरन बजते रहेंगे, सावधान!
गाफिल रहने का नही, अब प्रावधान!
याद रखो हिन्द, अब आजाद है!
भारत के ऐ नौजवानो, सावधान!

(२)

जागरण करना है तुमको, सावधान!
युग प्रहरी बनकर रहना, सावधान!
आजादी की रक्षा करनी है तुम्हे!
भारत के ऐ नौजवानो, सावधान!

(३)

धीरज रखना, तुमको रहना सावधान!
आशावादी बनकर रहना, सावधान!
जीवन मे संघर्ष करना है तुम्हें!
भारत के ऐ नौजवानो, सावधान!

जय-जयकार है

—०—

[यह कविता, पाक फौजा के हथियार डालने के बाद एव श्रीमती इ दिरा गा धी, प्रधान मन्त्रीजी को भारत सरकार द्वारा "भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित करने के पश्चात्, जयपुर मे माणक चौक चौपड पर नागरिक सुरक्षा समिति की ओर से आयोजित, विजय दिवस के उपलक्ष्य में ता० २०-१२-७१ को सावजनिक सभा मे पढी गई। स म]

[१]

बगला मुक्ति-वाहिनी,
सेना की जय-जयकार है,
आज हिन्दुस्तान की,
फौजा की जय जयकार है,
उन शहीदो बहादुरा को,
जो वतन पर मर मिटे,
मुक्त बगला देश की,
'निर्वाण' जय जयकार है।

[२]

जल की, थल की, नभ सेना की,
आज जय-जयकार है।
भारत-रत्न इन्दिरा गाँधी!
तेरी जय-जयकार है।
हि द-पाक का जग जिसको
जीतने का श्रेय है,
ऐसो भारतवप की
जनता की जय-जयकार है।

पुरानी और नई पीढ़ी

आजादी हासिल हुई
हमारी कुर्बानियो पर,
आजादी कायम रहेगी
तुम्हारी कुर्बानियो पर।

बापू का व्यक्तित्व

एक सूरज
और
करोडो सूरजमुखी
जिधर घूमता था
उधर ही घूम जाते थे

बापू की रामायण

आजादी की अलख जगाई
आजादी की कसम दिलाई
भारत को आजाद कराया
आजादी को देख न पाया

धधकती आग :

[यह कविता पहली बार ता २२ अप्रैल १९७१ के दिन कवि सम्मेलन, जिसका आयोजन सव श्री ताराप्रकाश जाशी, वीर सक्सेना आदि के सयोजकत्व मे, रामनिवास बाग, जयपुर मे वगला देश की सहायतार्थ किया गया था मे पढी गई थी।

काव्य प्रेमियो का चौथे पद की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि जो विचार इसमे व्यक्त किये गये है वे कितने सत्य के रूप मे प्रगट हुए है।

स म]

नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही।

— १ —

तोप बदूकें चलाकर देख लो
आस्मा से आग बरसा देख लो
निहत्थो का खून करके देख लो
अबलाओ को भून करके देख लो
आजादी की लहर बम्मो से कभी रुकती नही
जो भभकती आग है वह आग से बुझती नही
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही

---

* (१) दैनिक 'लोक मत' बीकानेर १५-८-७१
(२) टाइम्स आफ राजस्थान, बीकानेर। (स्वाधीनता), विशेषाक १५-८-७१
(३) फारवड टाइम्स जोधपुर (स्वाधीनता विशेषाक १६ ८ ७१) मे प्रकाशित।

— २ —
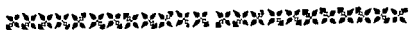
चंगेज की सी खूं-रेजी कर देख लो
नादिरशाही जुल्म करके देखलो
हिटलर शाही बेरहमी कर देखलो
नेपोलियन की वह तबाही देखलो
कुर्बान होने वाले के अरमा कभी मिटते नही
कामयाबी के बिना बहादुर कभी रुकते नही
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही।

— ३ —

मासूमा का खून करके देखलो
खूनी होली खेल करके देख लो
खून मे हाथो को रग कर देख लो
खून का तुम जाम पीकर देख लो
इन्कलाबी आग यह, तलवार से रुकती नही
हुब्बे वतन की आग तो बारुद से बुझती नही
नाव कागज की कभी चलती नही
जुल्म की टहनी कभी फलती नही
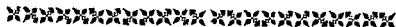
धमकी का जवाब :

चुनौती

[सदर याहया खा साहिब ने भारत को युद्ध की धमकी देकर डराने की कोशिश की थी। यह कविता उस धमकी के जवाब मे लिखी गई थी। अतिम पक्तिया मे व्यक्त की गई कल्पना कितनी सत्य के रूप मे प्रगट हुई है, यह पाठक स्वय निर्णय करल।

स म]

गीदड भभकी से कभी,
हम टलने वाले है नही
पिटने वाले टैको से,
हम हटने वाले हैं नही
जेटो पर नैटो की मार,
इतनी जल्दी भूल गये
थोडी सी जो फूक भरी,
तो डब्बूजी तुम फूल गए
बदर घुडकी से कभी,
हम डरने वाले है नही
अबके तुमने सर उठाया,
अब समझलो सर नही।

६ 'वतमान्' साप्ताहिक बीकानेर दिनाक १६ ८ ७१ म प्रकाशित।
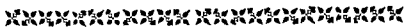
व्यापक प्रार्थना स्थल

गीत

[भारतवप ग्रादिकाल मे ही सब शक्तिमान ईश्वर की शक्ति मे विश्वास रखने वाला ग्रास्तिक एव धम प्रधान देश रहा है। यहा के धमग्रन्थो की चर्चा हर व्यक्ति चाह वह किसी भी मजहब का मानने वाला हो, की जुबान पर मिलेगी। ईश्वर चाहे साकार हो चाहे निराकार लेकिन धर्माचार्यो ने तो उसे पूजा की चहार दीवारी मे बाध दिया। ग्राज की बदलती हुई मान्यताग्रो मे ग्रौर जब मनुष्य को जीवनयापन की कठिनाइयो से फुरसत नही मिलती है तो उसके लिये यही उपाय है कि वह हृदय से ग्रास्तिक बना रहे ग्रौर जहा जब भी समय मिल सके उस समय ग्रपने तरीको से उसे स्मरण कर ल। प्राथना स्थल चहारदीवारियो मे सीमित नही है व्यापक है। सायरन द्वारा कवि का यही सदेश है।

स० म०]

[१]

वही कण कण मे व्यापक है
वही घट घट मे व्यापक है
वही व्यापक है फूलो मे
वही व्यापक है शूलो मे
वही समार मे व्यापक
वही मझधार मे व्यापक
वही व्यापक गगन मे है
वही व्यापक मगन मे है
तो सुमिरन उसका हम करल
कि मन के मदिर मे धर लें
कि प्राथना 'निर्वाण" जभी चाहे जहा कर लें।
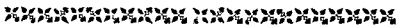
[२]

कि रेगिस्तान जगल मे
कि मरु उद्यान मगल मे
कि ओटा पाटा चवल म
कि शीत के सीमित सबल मे
खिजाओ म बहारो मे
कि वर्षा की फुहारा मे
फलक के चांद तारा मे
अजी सीमा सितारो मे
कि दर्शन उसका हम कर ल
कि मन के मदिर मे धर लें
कि प्रार्थना 'निर्वाण' जभी चाह जहा कर ल।

[३]

दीन दुखिया की आहा मे
प्रेम से मिलती बाहो मे
झोपडी भोले गावो मे
कि नन्हो की निगाहो मे
कटीली जीवन राहो मे
समन्दर की अथाहा मे
अजता की गुफाओ म
कि हिमगिरी की शिखाओ मे
कि दर्शन उसका हम कर ले
कि मन के मदिर मे धर ले
कि प्रार्थना 'निर्वाण' जभी चाह जहा कर ल।

[४]

नही हम मंदिरो मे हो
नही गिरजा घरो मे हो।
नही मस्जिद मे बैठे हो
नही गुरद्वारे बैठे हो।
न हो ऋषिकेष तपोवन मे
न हो वृंदावन मधुवन मे।
न हो मथुरा के कुंजन मे
न यमुना तीर निकुंजन मे।
तो भी सुमिरन हम कर लें
कि मन के मंदिर मे घर लें।
कि प्राथना "निर्वाण" जभी चाहे जहा कर लें।

[५]

वही है राज घराने मे
वही है हर वीराने मे
कि कोयल कुहू-कुहू गाने मे
कि मीठे बोल सुनाने मे
हवा के झूलते पुल मे
गुले-गुलजार गुलगूल मे
चहकती उडती बुलबुल मे
चमन की चुस्त चुल-बुल मे
अजी दीदार हम कर लें
कि मन के मंदिर में घर लें
कि प्रार्थना निर्वाण' जभी चाहें जहा कर लें।

: सदर याहया खा

को

हिदायत

(तरन्नुम के साथ)

[यह कविता भारत पाक तनाव के दौरान मे, भारत रूस मत्री सधि होने के पश्चात लिखी गई थी। भारत की सुदृढ सनिक एव जनता की शक्ति तथा रूसी सहयोग एव सहायता के अहसास के बल पर कवि ने यह कविता एव विशेषत अतिम दोनो पद लिखे है।

भारतीय जवानो एव जनता ने कवि की कल्पना को साकार बनाया है। अतएव वे बधाई के पात्र है।

स०म०]

— १ —

म वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए
जि दादिली है हम ने सीखी, रखने इज्जत कौम की
आबरू जाने न दगे, हि द को इस भौम की
उगली उठाई इस तरफ तो काट दूगा हाथ को
आखें उठाई इस तरफ, तो काट दूगा माथ को
हम तो ही पैदा हुए मुल्के हिफाजत के लिए
म वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए

— २ —

जो पराई फूक से बजते, वे होते वज्र मूख
काला पीला रग भी, दिखलाई देता उनको सुख
आख मे यह मज होता, मेडिकल का यह उसूल
लाइलाजी मज कहते, अल्ला ताला औ रसूल
हम तो चुप बठे हैं बस, तेरी भलाई के लिए
म वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए

: टाइम्स आफ राजस्थान, बीकानेर दिनाक ९–१०–७१ मे प्रकाशित

— ३ —

म जानता हूँ तुझ को मेरे मुल्क से ही रश्क है
हर कौम को गुमराह करना, ही तो तेरा इश्क है
आजाद बगला देश का, हर मुल्क मे अब नाम है
और हम को तू तो मुफ्त मे ही, कर रहा बद–नाम है
मेरा वतन गुल्जार है, मेरे लिए सब के लिए
म वतन के वास्ते हूँ, यह वतन मेरे लिए

— ४ —

जुल्म की तलवार पर मजहब कभी टिकते नही
ओ रिश्वती कलदार पर मजहब कभी बिकते नही
यह खून की नदिया बहाने से, कभी रुकती नही
आजाद होने की तमना, ता कभी बुझती नही
रे [1]अक्ल तेरी खो गई क्या घास चरने के लिए
मै वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए

— ५ —

यह किल्लत हर रोज की, लगती मुझे अच्छी नही
तोह–मत लगाना नित नई यह आदतें अच्छी नही
अब भी सभल जाये तो, समझ इसमे तेरी खैर है
वरना पचर हो करेंगे हम तो काटे कर हैं
जा निसारी जानते हैं, सर हथेला पर लिए
मै वतन के वास्ते हूँ यह वतन मेरे लिए

— ६ —

गर तुझे लडना ही है, तो लडले मुझ से एक बार
और तबियत खोल कर, तू काढले दिल के गुबार
अबके तू उलझा है हमसे, अब तबाह हो जायेगा
आज दो की बात है, कल चार मे बट जायेगा
रे ! क्यो खडा कगार पर, बे मौत मरने के लिए
म वतन के वास्त हूँ यह वतन मेरे लिए

— ७ —

खून इतना गम है कि गोलियाँ गल जायेंगी
गर लगी मेरे वतन पर, व्यथ ही सज जायेंगी
तीरो तवर तलवार, जब यह बज्र से टकरायेंग
यह जेट पेटनटक सार, धूल मे मिल जायेंगे
यहा हर जवा तैय्यार है तुझ स निपटने के लिए
म वतन के वास्ते हूँ, यह वतन मेरे लिए

ॐ

इतिहास बोलता है

(१)

ऐसा जल जला तूफान
इगलिस्तान मे आया
कि ब्रिटिश फौज ने या
जगे आजादी का चलाया
कौम की खातिर था
दरिया खूँ का बहाया
कामे खातिर शाह का
फासी प लटकाया
वसा ही मौका जबकि
बगला देश मे आया
तो मुक्तिवाहिनी ने
जगे आजादी का चलाया
आजाद बगला देश को
जब ध्यान मे आया
कि निर्दोष बगलादेश
को था किसने सताया
किसने बगला देश का
था खून बहाया
तो ए मलिक पर ठीक
मुकदमा है चलाया।
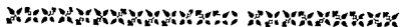
(२)

गद्य–कविता

गीदड को जब मौत आती है,
तो हक्का बक्का होकर
गाव की तरफ दौडता है
जब विनाश की सवारी आती है,
तो दिमाग का एन्जिन
रेल की पटरी को छोडता है
स्पेन का अजेय जहाजी आरमेडा,
और नेपोलियन का रूम पर हमला
इसके जीते जागते सबूत हैं
हिन्द के हमले से पस्त हिम्मत,
मेजर जनरल भी, अपनी जान
बचाने के लिए, मैदाने जग मे,
पजामे को हाथ मे लेकर दौडता है
ढाका मे पाक फौजो के
हथियार डाल देने के बाद भी,
अपनी करारी हार से झु झलाकर
जनरल याहया खा
खेत और खलिहानो मे
जग चालू रखने के लिये
रडियो पर ऐलान करता है

शायरो पर शेर

के द्र वि दु काका हाथरसी

[काका हाथरसी की सेवा मे यह कविता अभिन दन के रूप मे १५-८-७१ (गणतन्त्र दिवस) के दिन भेज दी गई थी। उन्होने अपनी प्रशस्ति मे लिखी गई कविता का उत्तर भिजवाया, जिसका प्रारम्भिक अ श जो कवि को स्मरण है प्रकाशित किया जाता है —

'कविता तुम्हारी मिल गई भूरसिह निर्वाण।
अपनी प्रशस्ति पढ करके प्राण हुए बलवान"

स० म०]

[१]

शायरो पर शेर घड दे
चाहे शायर न भी हो
और अगर महफिल मे पढ दे
शायर ही कहलायेगा ।

[२]

उस्ताद ने यह गुर बताया
मैंने भी कुछ लिख दिया
मेहरबानी करके थोडा
आप भी सुन लीजिए ।

[३]

ते‌ऽरी सूरत देख कर
काका! हसी आती मुझे
क्यो पढू ते‌ऽरी किताबें
शार्ट कट मेऽथड है ।

[४]

इसलिए तो तेऽरी फोटू
मैंऽने घर मे टाग ली
इक नजर दीदार कर
खुल करके हस लेता हूँ मैं ।

[५]

तू तो क्या हसता है काका !
तेरी दाढी हसती रोज
तेरी दाढी मे भी काका !
हमने की तासीर है ।

[६]

यू० एन० ओ० के सग्रहालय मे
तेरी दाढी रखवा दू गा
तेरी ओ तेरी दाढी की
यादगार बन जायेगी ।

[७]

दुनिया भर की वडी ताकतें
आपस मे लडती है रोज
तेरी तो, दाढी के काका !
वे दीऽदार करने आयेंगी ।

[८]

इसलिए मैं कहता हूँ कि –
इन्द्रा ने दो आखें दे दी
तू इक दाढी दान कर
प्रलय काल तक तेरी दाढी
कायम हो रह जायगी ।

जागरण

जागरण करना है तुमको, सावधान !
युग-प्रहरी बनकर रहना, सावधान !
आजादी की रक्षा करनी है तुम्हे !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !
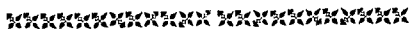
सम्बोधन

[यह कविता—श्रीमती इन्दिरा गाधी, प्रधान मन्त्रीजी की सेवा मे २६ जनवरी, १६७१ को प्रेषित कर दी गई थी। कवि को प्रत्युत्तर के रूप मे धन्यवाद का पत्र प्राप्त हुआ। हाल के युद्ध मे भारतीय विजय के फलस्वरुप इसमे "गुरुओ एव राजनीति के" शब्दा के स्थान पर "मुल्को और 'कूटनीति के" शब्द डाल कर चारचाद लगा कर सामयिक बना दिया है। इस सूझबूझ के लिए कवि धन्यवाद के पात्र हैं —स० म०]

इन्दिरा जी से

मोती और जवाहर इन्दिरा! अनुपम चाद सितारे हैं,
अन्धकार मे राह प्रदशक गगन मण्डली तारे हैं ॥१॥
राजनीति मे नीति निपुण तू मोती की तू पोती है
वक्त बुहाई कर देती है, उपजै माणक मोती है ॥२॥

नेहरूजी से

दाद उसकी अक्ल पर है, जोश पर ओ होश पर
सियासी घुड दौड मे, मुल्को को पीछे रख दिया ॥३॥
तुझ से ज्यादह नेहरू! तेरी बेटी ऊपर नाज है
कि कूटनीति के बहादुरो का, फाश पर्दा कर दिया ॥४॥

जनता से (पैरोडी)

उसकी बेटीऽ ने दुनिया उठा रक्खी है सर पर
खैरियत गुजरी, कि नेहरू के बेटा न हुआ ॥५॥

मान्यता

बागला को मान्यता दे दी गई
इन्दिरा जी ने बात करदी, यह नई
दुश्मनो के दोस्त तो चकरा गये,
दुश्मनो की अक्कल चक्कर खा गई।

ऽस्वाधीन भारत गाधी-शताब्दि अक बीकानेर १२ २ ७१ मे प्रकाशित।
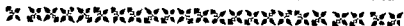
उद्बोधन

[यह कविता काश्मीर के ऊपर आक्रमण हुआ तब सनिक शिक्षा को मद्देनजर रखते हुए लिखी गई थी । इसमे यथा स्थान सामयिक परिवतन किये गये हैं । तब से अब तक यद्यपि औद्योगिक वज्ञानिक, सनिक शिक्षा मे बहुत कुछ विकास एव वढोत्तरी हुई है, परन्तु परिवर्तित (बदलती) हुई परिस्थितियो मे भी कवि इन सब को अपर्याप्त मानता है । स्वतन्त्र भारत पर कई मुल्को की आखें लगी हुई है । इतना ही इशारा काफी है ।

आज भी यह कविता जागृत भारत की जनता के लिए चुनौती के रूप मे एव सरकार के लिए सुझाव के रूप मे अपना महत्व रखतो है ।

स० म०]

[१]

पश्चिम की शिक्षा मे रगकर
उसी सभ्यता को अपनाया ।
भारत के अतीत गौरव को
है हमने इकबार भुलाया ॥

[२]

खान पान औ रहन–सहन मे
पश्चिम का आदश बनाया ।
अवगुण हमने ग्रहण किय वह
सद्गुण का धत्ता वतलाया ॥

[३]

सीखा हमने फशन उनसे
दाढी औ मूछ मुडवाना ।
गुटर गुटर गू बातें करना
अकड अकड इठला कर चलना ॥

[४]

वतमान वैज्ञानिक शिक्षा
से भी कोसो दूर पडे हैं ।
जगत शिखर पर पहुँच रहा है
हम न अभो सा कदम वढे हैं ॥

[५]

औद्योगिक शिक्षा पर देखो
अभी न पूरा ध्यान दिया है ।
सनिक शिक्षा का भी दरजा
अभी न पूरा मान दिया है ॥

[६]
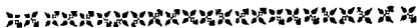
यह है स्वतन्त्र भारत बधु !
इस पर जब तब हमले होगे ।
मानव जीवन के विध्वसक
टन टन के गोले बरसेंगे ।।

[७]

देखो पश्चिम दरवाजे पर
दुश्मन ग्राज खडा खट करता ।
ग्रौर वहा उत्तर मे देखो
काश्मोर का द्वार धधकता ।।

[८]

हिन्द पूर्वी सीमा ऊपर
ग्रब भी खतरा बना हुग्रा है ।
हिन्द पश्चिमी दरवाजे पर
ग्रब भी दुश्मन तना हुग्रा है ।।

इसलिए हम कहते हैं कि —

[९]

जीवन की ग्रावश्यक सनिक
शिक्षा की शालायें खोलो ।
भारत के बच्चे बच्चे को
सनिक शिक्षा ही से मोलो ।।

[१०]

राइफल बम बारुद बनावें
वायुयान मे उडकर जावें ।
यान्त्रिक ग्राविष्कार करें ग्ररु
तान्त्रिक विद्या को ग्रपनावें ।।

[११]

वायुयान निर्माण करें ग्ररु
विमान भेदी तोप बनावें ।
मिराज फेन्टम सबारो को
मिग, हटर से मार गिरावें ।।

[१२]

भारत भू-रक्षा हित ऐसी
सुसज्जित सेनायें होवें ।
राष्ट्र जाति उद्धार कर सकें
विश्व-समर मे विजयी होवें ।।

रण-कंकण

[राखी बहन केवल अपने भाइयों के ही बांधती हैं, लेकिन रण-कंकण माता अपने पुत्र के, पत्नी अपने पति के और बहन अपने भाई के आरती उतारती हुई, मस्तक पर विजय का तिलक लगाती हुई दायें हाथ की कलाई पर बांधती है।

रण-कंकण बांधते हुए देश रक्षा की भावनाओं से ओतप्रोत करती हुई, मातृभूमि की रक्षा के हित देश पर बलिदान होने की प्रेरणा देती हुई, रण प्रयाण के लिए हंसते हंसते विदा करती है।

वीर भूमि राजस्थान में इस प्रथा की विशेष रूप से परिपाटी रही है। स्वतंत्र भारत की रक्षा के लिए २५ वर्षों में ४ युद्ध हुए हैं उनमें इस आदर्श पूर्ण परम्परा को पूर्ण रूप से निभाया गया है।

स० म०]

(१)

साज विजय की कुंकुम रोली
भर कर राष्ट्र भाव की झोली।
आती माता वधुएं भोली
कंकण ले बहनों की टोली॥

(२)

कंकण के वे बंधन लाती
कंकण बांध अमर कर जाती।
स्वतंत्र युग के पाठ पढाती
वीरोचित यशगान सुनाती॥
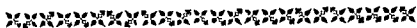
(३)

आओ प्यारे वीरो आओ
देश धरम पर बलि बलि जाओ।
सीमा की रक्षा करने को
मर कर आज अमर हो जाओ॥

(४)

देश प्रेम के दीवाने बन
देश जाति पर बलि हो जाओ।
मातृ भूमि के परवाने बन
निज प्राणो की भेंट चढाओ॥

(५)

पीछे पीछे हम भी आती
आगे आगे बढते जाओ।
नही पडी पीछे रह जावें
हमको भी वह मार्ग दिखाओ॥

(६)

हिन्द निवासी बहने भाई
सीमा रक्षा सभी करेंगे।
राष्ट्र जाति अरु मातृभूमि के
ऋण से होकर उऋण मरेंगे॥

(७)

दुश्मन के आते जेटो को
नेटो से बम मार गिराओ।
हथगोला से हमला करके
पिटन टक बेकार बनाओ॥

(८)
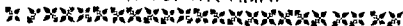
फाइटर राजा बम्बारों को
मिग हण्टर से आग लगाओ।
दन दन करती तोपों ऊपर
भजी दनादन बम बरसाओ॥

(९)

सीमा में गर घुस पैठिए
सीधे ही यमलोक पठाओ।
छतरी से उतरें सैनिक तो
कमर तोड़ थाने पहुँचाओ॥

(१०)

राडारों में आग लगाकर
धूल धूसरित करते जाओ।
पिल बाक्सों को तहस-नहस
कर शत्रु सैन्य को मार भगाओ॥

(११)

बधन युत कश्मीर भाग को
दुश्मन से चिर मुक्त कराओ।
अतुल शौर्य वीरत्व दिखाकर
मा के सच्चे लाल कहावो॥

(१२)

निर्दोषी जनता का देखो
कभी न प्यारे! खून बहाना।
हॉस्पिटल गर मिले राह में
हाथ जोड़ आगे बढ़ जाना॥

(१३)

मस्जिद गिरजा जेलो ऊपर
कभी न प्यारे बम बरसाना।
सकट की इन घडियो मे भी
आदर्शों की आन निभाना॥

(१४)

भारत के वीरो अब ऐसा
आज विजय त्योहार मनाओ।
सगीनो की नोको पर तुम
नव भारत इतिहास बनाओ॥

(१५)

शोणित की नदियो मे नहाकर
विजय नाद करते घर आओ।
मातृ भूमि की रक्षा के हित
रण-ककरण यह सफल बनाओ॥

ईंट का जवाब
पत्थर

इन्सानियत से
पेश आने वाले हम
जो मुल्क होते हैं
उनको भी
तर कर दिया करते हैं।
लेकिन हैवानियत से
पेश आने वाले को
ईंट का जवाब
पत्थर से
दिया करते हैं
इसका जीता जागता सबूत
यह है मित्रो !
कि पाकिस्तान को
पनपने के लिये
नहर का पानी देकर
जेटों को नेटों से
वाम्बर को हन्टर से
और मिराजों को मिग से
बरबाद किया करते हैं।
इतना ही नहीं
हमारे सुख में
और संकट काल में
साथ देने वाले मित्र
हमारे छद्मवेशी मित्रों को
जो मानवता के शत्रु
एवं नर संहार के पोषक हैं
अपनी वीटो की मार से
मिसमार किया करते हैं।

डबल रोल

[गद्य कविता]

[भारतीय रमणी का, वीरमाता और वीरपत्नी के रूप मे, कवि ने इस कविता मे जो त्याग, बलिदान एव सहिष्णुता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है वह सराहनीय है। यह उनकी स्वय की सूझ है। इस पृष्ठिभूमि के लिए उनको साधुवाद देना उचित है। स० म०]

मुल्के-आजादी की खातिर,
जब जगे बिगुल बजती है,
तो सर पर कफन बाँध कर,
हँसते हँसते विदा करती है।
लेकिन दौराने जग मे,
कही, ड्यूटी के अजाम मे,
गफलत न हो, इसलिए,
शौहर के मरने की खबर,
फरजद को, न खुद करती है,
न किसी को करने देती है।
यू हिन्द की बहादुर औरत,
वीरमाता और वीरपत्नी का,
डबल रोल अदा करती है।

ठूठों वाले देश

[राजस्थान का अधिकतर भाग रेगिस्तानी होने के कारण यहा हरियाली और हरे वृक्षो की कमी है। खेजडो,जाटी कैर,कटील झाडिया ही बहुतायत मे पाई जाती है। इन्ही कटीले वृक्षो मे सहन शक्ति अधिक मात्रा म होती है। पानी बहुत कम मिलता है। आन्धी पाले, तूफानो मे भी यह वृक्ष गर्व से ऊचा मस्तक किए हुए अपना अस्तित्व बरकरार रखते है। इसलिए कवि ने राजस्थान के वृक्षो को 'ठूठ' ही कहा है।

उत्प्रेक्षा के रूप मे यह ठूठ राजस्थानी वीरो के प्रतीक है जिनकी अद्वितीय वीरता की कहानियाँ इतिहास के स्वर्ण अक्षरो मे लिखी हुई है और इस युग मे भी रणबाकुरो ने अपने वीरत्व का इतिहास मे हिन्द पाक सग्राम मे अमरता की अमिट छाप लगाई है।

स० म०]

हे ठूठों वाले देश जाग

(१)

तेरे ठूठो की आग जगे
मेरे भारत के भाग जगे
सारे तपके यो मिल जायें
जैसे हो मा के पुत्र सगे
छूटे अनुचित सब रग-राग
हे ठूठो वाले देश जाग।

(२)

जालिम ने एक कुल्हाडा ले
पत्ते तोडे, तोडे डालें
पर ठूठो की मजबूती से
उसके हाथो पड गए छाले
वह गया छोड मैदान भाग
हे ठूठो वाले देश जाग।

(३)

तेरे ठूठा मे मान भरा
अरमान भरा अभिमान भरा
फूलो पत्तो और टहना को
जिनमे था सुख सामान भरा
अपने पन मे कुछ दिये त्याग
हे ठूठा वाले देश जाग।

(४)

ठूठा की शौर्य्य कहानी मे
है यू इतिहासिक गान छिपा
चित्तौडी खडहर महलो मे
ज्यो पद्मिनी का बलिदान छिपा
बरबाद हुआ कुछ सब्ज बाग
हे ठूठो वाले देश जाग।

(५)

तूफानी कुटिल कुचालो मे
ओले पाले भूचालो मे
फिर भी यह ठूठ गटूट रहे
है इनकी जड पातालो मे
कीली ज्यो मस्तक शेष नाग
हे ठूठो वाले देश जाग।

(७)

तिस पर भी आज खडे यहा पर
देखा ऊचा मस्तक आकर
सीमा की रक्षा करने को
माना अद्भुत बल पा पाकर
गात जाते युद्ध प्रलय राग
हे ठूठा वाले देश जाग!

(८)

भूखे नगे हम रह लेंगे
गर्मी सर्दी को सह लगे
खा लेगे रोटी चटनी से
जगल मे मगल कर लेंगे
गर नही मिलगा दाल साग
हे ठूठो वाल देश जाग!

(९)

पृथ्वी पाताल हिला दगे
जालिम का जुल्म मिटा देंगे
प्राणो को आज हथेली रख
हम दुनिया को दिखला देंगे
कसे खेल शोणित से फाग
हे ठूठो वाले देश जाग!

९९

भारतीय नारी के प्रति

कर मे ककण बाध हमारे,
भाल विजय का तिलक लगा दे।
देश जाति अरु आन मान पर,
मर मिटने का जोश जगा दे ॥१॥
आजादी की ओ दीवानी!
स्वत त्रता की अहो पुजारिन!
जुध से भागे पतियो को,
तू शिक्षा देने-हारी सुहागिन ॥२॥
तू सोई है अरे सहोदरे!
तुझको सोये सदिया बीती
काया जग की पलट चुकी है
तो भी तो तू है नही चेती ॥३॥
अब भी जग ओ युग दृष्टा बन,
महा-क्राति की आग लगा दे।
भूख प्यास से पीडित तिरपित,
प्राणो का उद्धार करा दे ॥४॥
अगर नही, तूफान भयकर
झोको को जो निशि दिन सहते
ऐसे टिमटिम करते प्राणी,
दीपो का 'निर्वाण" करा दे ॥५॥
कर मे ककण बाध हमारे
भाल विजय का तिलक लगा दे।
देश जाति अरु आन मान पर,
मर मिटने का जोश जगा दे ॥६॥

राष्ट्र के नौनिहाल के प्रति[१]

आधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लडता जा।।

[१]

क्यो यहा पर तू है पडा हुआ
रे अरे व्यथ मे अडा हुआ
ओ, जग कहा पर है खडा हुआ
इसमे क्या तू पाता है मजा
आधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लडता जा।।

[२]

तूफाना की परवाह नही
तेरा विश्वास न जाय कही
जीवन की बजती वीणा ही से
जीवन झकृत करता जा
आधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लडता जा।।

[३]

सघर्षो की चौपट्टी मे
जीवन की जलती भट्टी मे
सासारिक चलती घट्टी मे
पिस गलकर कुछ ढलता जा
आधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लडता जा।।

[४]

कहते हैं वे सब निगम अगम
चाहे पथ हो तेरा दुगम
फिर भी गाता जाता सरगम
ऊचे परवत पर चढना जा
आंधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण मे लडता जा।।

[५]

फिर ईश भरोसा साथ लिये
सिर बाध मु डामा हाथ लिये
कष्टा को सहते नित्य नये
टकराता गिरता उठना जा
आधी सा आगे बढता जा।
गाधी सा रण म लडता जा।।

---

१. साप्ताहिक लोक जीवन, जोधपुर
गणतन्त्र दिवस, विशेषाक, २३ जनवरी १९७० म प्रकाशित

[६]

होकर रक्षित जुधमाजा मे
रण के वजते सब बाजो मे
बम तोपो की आवाजा मे
निभय होकर तू लडता जा
आधी सा आगे वढता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

[७]

अपने गौरव के आनो पर
निज देश जाति सम्माना पर
तप त्याग और वलिदानो पर
कुछ वनता और विगडता जा
आंधी सा आगे, बढता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

[८]

विषधर भुजग गर मिल जाय
गरजते शेर बबर चाहे
ओले आधी पानी आये
तूफानो दौरा करता जा
आधी सा आगे बढता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

[६]

वीरो का व्रत ही आजीवन
है शूर-वीरता सजीवन
वीरो का मरना ही जीवन
यह मत्र जाप तू जपता जा
आधी सा आगे वढता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

[१०]

जग सेवा व्रत को अपना कर
ओ रुढिवाद को ठुकरा कर
तद्रित भारत को जागृत कर
आदश उपस्थित करता जा
आधी सा आगे वढता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

[११]

तव पथ काटे फूल बनेगे
कष्ट सभी सुख मूल बनेगे
दुश्मन भी अनुकूल बनेगे
माग प्रदशन करता जा
आधी सा आगे बढता जा ।
गाधी सा रण मे लडता जा ॥

ताश्कन्द

[१]

उपालम्भ

(शास्त्रीजी का जनरल अय्यूब को)

फरिश्ते
बनने चले थे
हैवान बन गये
शराफत को छोडकर
शैतान बन गये
तेरे जुल्मो का
नतीजा
यह है जालिम
कि लहलहाते खेत
रेगिस्तान बन गये
कि मस्जिद गिरजा
जेल
कब्रिस्तान बन गये
कि आबाद कस्बे गांव
उजडिस्तान बन गये।

[२]

द-दभरी दास्तां

बुलाया था अगर
जो आपको
कुछ ठहर कर जाते
जाना जरूरी था
अगर, कुछ
बोल कर जाते
दिल मे खटक
यह रह गई कि
क्या पैगाम था ?
शास्त्री जी ! दद-
भरी इस दास्ता
से मुक्त कर जाते।

मेरा प्यारा वेश

अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(१)

कोट पेंट नकटाई वाला
दाढी मूछ मुडाई वाला
पाउडर क्रीम मलाई वाला
नाजुक नरम कलाई वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश दुलारा वेश

(२)

लैटेस्ट फैशन के बालो वाला
पिचके पिचके गालो वाला
बटन बक्सवे तालो वाला
लग बूट से छाला वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश, दुलारा वेश

(३)

टेढी गरदन करने वाला
मद से जल्दी भरने वाला
लचक चाल से चलने वाला
हो अमचूर अकडने वाला
अब भी मेरा प्यारा वेश
प्यारा वेश दुलारा वेश

(४)

कमती आमद लाने वाला
कर्जा बोझ लदाने वाला
ज्यादा खर्चा लाने वाला
ताना को सुनवाने वाला
अब भी मेरा प्यारा देश
प्यारा देश दुलारा देश

(५)

निज औकात भुलाने वाला
थोथा राव जमाने वाला
भोले भाले भायो को, जो
डर से दूर भगाने वाला
अब भी मेरा प्यारा देश
प्यारा देश, दुलारा देश

(६)

सोशलिज्म को लाने वाला
सबको साहब कहाने वाला
सूय चद्र से हमें हटा कर
तारो मे चमकाने वाला
अब भी मेरा प्यारा देश
प्यारा देश, दुलारा देश

(७)

टेढा टोप लगाने वाला
साफे को सटकाने वाला
आगे बढकर प्रेसिडेन्ट से
हैंड-शेक करवाने वाला
आजाद हिन्द मे प्यारा देश
प्यारा देश, दुलारा देश

::

धैर्य-धारण

धीरज रखना, तुमको रहना सावधान !
आशावादी बनकर रहना, सावधान !
जीवन में संघर्ष करना है तुम्हें !
भारत के ऐ नौजवानों, सावधान !
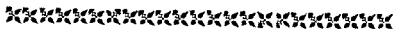
राष्ट्र–निष्ठा :

गीत

चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजा्दी रहे।

(१)

मेरी जमुना रहे, मेरा गगा रहे
यह तिरगा रहे, मन चगा रहे
लहराता रहे, फहराता रहे
इठलाता रहे, बल खाता रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।

(२)

नौजवानो की टोली, यहाँ बढती रहे
दुश्मन सीने पे छाती पे, चढती रहे
मेरी कुर्बानियाँ, लासानी रहे
मेरे मस्तक पर दुर्गा भवानी रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।

१ साप्ताहिक फारवड टाइम्स, जाधपुर, दीपावली विशेषाक, १९७१, पृष्ठ २ मे प्रकाशित।

(३)
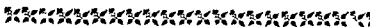
मेरे वेद रहे, ये पुराण रहे
मेरी इंजिल और कुरान रहे
सब धर्मों के सारे ग्रन्थ रहें
सारे मजहब, सब पन्थ रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे,
मेरा भारत रहे, आजाद्दी रहे।

(४)

चाहे कितनी, यह दुनियाँ बदलती रहे
आँखें मूँदी रहे, झांसे देती रहे
इन्सानों की दुनिया में इन्सा रहे
मेरे भारत में हिन्दू मुसल्मा रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे,
मेरा भारत रहे, आजाद्दी रहे।

(५)

चाहे कितना ही रंग, वे बदलते रहें
कुछ भी कहते रहें, कुछ भी सुनते रहें
ईमानों की दुनिया में ईमा रहे
ईमानों पे मिटने के अरमा रहें
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजादी रहे।
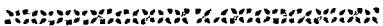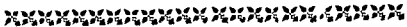
(६)

मेरे जीवन मे जोशे-जवानी रहे
मेरी आखो मे मोहब्बत का पानी रहे
मस्ती भरी मेऽरी होली रहे
जगमगाती हुई, यह दिवाली रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, ग्राजादी रहे ।

(७)

मेरे बल रहें, यह किसान रहें
मेरे खेत और खलियान रहे
मेरे खेतो में वर्षा बरसती रहे
मेरे बादल मे ब्रिजली चमकती रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे,
मेरा भारत रहे, ग्राजाऽदो रहे ।

(८)

मेरा गुलशन रहे, मेरा मालीऽ रहे
लहलहाती हुई हरियालीऽ रहे
मुस्कराती हुई खुश-हाली रह
मेरा भारत सदा बल-शाली रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे ।

(९)
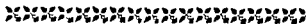
मेरे गुलशन मे कोयल कुहुकती रहे
मेरे बागो मे तितली फुदकती रहे
दही ऽ दूध की नदिया बहती रहें
मेरे भारत की, खुशबू महकती रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहे,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।

(१०)

मेरी माता का सर यह, सलामत रहे
मेरी माताओ बहनो की इज्जत रहे
लग जाये, तो जीवन की बाजी रहे
महमा आयें तो महमां-नवाजी रहे
चाहे तुम न रहो, चाहे हम न रहें,
मेरा भारत रहे, आजाऽदी रहे।

अनुभूतिया

उर्ध्व-मुखी

[२]

(गद्य कविता)

बादलो को आये देख
घड़े फोड देते हैं
सोफासेट घर मे देख
कुर्सी तोड देते हैं
बिजली से जलती बत्ती
लैंम्प तोड देते हैं
विद्युत् से चलते पखे
पखी मोड देते हैं
ऐसे उर्ध्व-मुखी
अपटूडेट महा प्राणी
अपने पतन के इतिहास में
एक नया पन्ना
और जोड देते हैं।

कौन चकनाचूर होता ?

[१]

कौन चकनाचूर होता ?
जो नशे मे चूर होता।
अकड कर अमचूर होता
-सानियत से दूर होता।
क्रोध से भरपूर होता,
क्रूरता मे शूर होता।
दुनिया का दस्तूर होता,
ेही चकनाचूर होता।

३३

गीत

[१]

आशाओ के दीप मेरे
न कभी यह बुझ सके हैं,
न कभी यह बुझ सकेंगे।
आशाओ के दीप मेरे,
जगमगाते ही रह हैं,
जगमगाते ही रहेगे।
। आशाओ के दीप मेरे!

[२]

आंधियो तूफान मे यह,
झूमते रहते रहे हैं,
झूमते रहते रहेगे।
झंझावातों से सदा,
संघष करते ही रहे,
संघष करते ही रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे!

[३]

वायु के ये तेज झोके
आते जाते हो रहे हैं
आते जाते ही रहेंगे।
किन्तु जीवन दीप मेरे,
जागरण करते रहे हैं,
जागरण करते रहगे।
आशाओ के दीप मेरे!

[४]

दीप्त जीवन दीप मेरे,

यह स्वय जलते रहे हैं

यह स्वय जलते रहेंगे।

किन्तु तम को चीर कर,

आलोक भरते ही रहे,

आलोक भरते ही रहेंगे।

आशाओ के दीप मेरे।

[५]

अज्ञानरूपी घन तिमिर को

ये भगाते ही रहे हैं,

ये भगाते ही रहेंगे।

ज्ञान की नव ज्योति को,

सतत जगाते ही रहे,

सतत जगाते ही रहेंगे।

आशाओ के दीप मेरे।

[६]

त्याग तप की भावना को

व्यक्त करते ही रहे हैं,

व्यक्त करते ही रहेंगे।

त्याग तप की भावना को,

विश्व मे भरते रहे हैं

विश्व मे भरते रहेंगे।

आशाओ के दीप मेरे।

[७]

नभ से जब ओले गिरे, तब,
भी तो यह जलते रहे हैं,
अब भी यह जलते रहेंगे।
व्योम से शोले गिरे जब
भी तो यह हँसते रहे हैं
अब भी यह हँसते रहगे।
आशाओ के दीप मेरे!

[८]

आफतें आती रहीं, ये
बाखुशी सहते रहे हैं
बाखुशी सहते रहेगें।
दीप्त जीवन दीप मेरे,
मुस्कुराते ही रहे है
मुस्कुराते ही रहेगे।
आशाओ के दीप मेरे!

परिवार सीलिंग ?[*]

(गद्य कविता)

'परिवार सीलिंग' पर मेरी कविता शूगर-कोटेड पिल्स नही है,
मेरी कविता, कडवी ओषध, कटू सत्य है, सही तथ्य है,
भारत के नवयुग के व्यक्ति, चाहे होवें नव-दम्पत्ति,
चाहे हो जनता सरकारे, सुन ले युग की नई पुकारे,
खा पीकर मर जायेगे, सतति-हित मे, अपने हित मे
सर्वोपरि देश के हित मे वे सेवा कर जायेंगे ।

सौ बातो की बात है

[१]

भूतकाल के गाने छोडो
मारे सभी तराने छोडो
आगे साचो, सुखी रहो
ये वतमान की बात है
सौ बातो की बात है ।

[२]

करण उप करण सब कुछ यहा पर
मदद करें सरकारी दफ्तर
जनता को तैयार करो तुम
सीधी सच्ची बात है
सौ बातो की बात है ।

[३]

अनपढ जनता गर जाहिल है
गवनमट को यह लाजिम है
सीलिंग का कानून बना दे
ये काट की बात है
सौ बातो की बात है ।

[४]

स तति के आदेश निकालो
दम्पत्ति-अध्यादेश निकालो
ससद मे है बहुमत अपना
क्या मुश्किल की बात है ?
सौ बाता की बात है ।

---

[*] परिवार नियोजन विषय पर, सम्बन्धित विभाग द्वारा आयोजित कवि-सम्मेलन बीकानेर अगस्त ७१ मे पढी गई ।

प्यारी कहानी है ६

(सन् १६६२ के सदभ मे)

[१]

मेरा दोस्त चाऊ चीन
कि मेरा दोस्त माऊ चीन
कि मेरा मित्र पडासी चीन,
बात यह, नही पुरानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

[२]

कि उसने देश पे धावा बोल,
बताया आजादी का मोल,
कि आजादी घणी अनमोल
कि आजादी हमारी राजरानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

[३]

उसने, जगाया देश मे सबको
सिखाया आप हम सबको
कि किस तरह सगीन नोको पर,
यहा, चढती नौजवानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

[४]

कि मेरा दोस्त चाऊ चीन,
कि मेरा दोस्त माऊ चीन
कि मेरा मित्र पडौसी चीन
बात यह, नही पुरानी है।
कि मेरे मित्र की प्यारी कहानी है ।।

---

६ यह कविता, चीन द्वारा भारत पर हमला किये जाने पर जयपुर मे माणकचौक, चौपड म आयोजित कवि सम्मेलन म पढी गई थी।
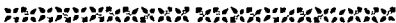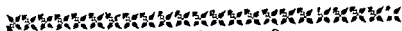
तूफान और सघर्ष

गीत

(१)

आधो से सघष कर रही
हर दरखत की हर टहनी
कि तूफानो से टकराती है
हर झाडी की हर टहनी
गर्मी सर्दी को भी सहती
कैर आक की हर टहनी
कि ओले पाले मे भी ठरती
खेजडले की हर टहनी।

(२)

आधी मे जो अडना जाने
तूफानो से लडना जाने
लुलना और लचकना जाने
दाव-पेंच से बढना जाने
उसका ही अस्तित्व रहेगा
उसका ही व्यक्तित्व रहेगा
निश्चय जीत उसी की होगी
और सफलता पग चूमेगी

(३)

सवक सिखाती तुम हम सवको
हर दरखत को हर टहनी
कि हर झाडो की हर टहनी
कि आकडले की हर टहनी
हर कूचे की हर टहनी
कर कटीली हर टहनी
कि खेजडले की हर टहनी

मधु–शाला

(१)

पूरा मोल चुकाने पर भी,
गर न मिले पूरी हाला,
साकी वन मालिक वैठा हो,
भेद-भाव से मतवाला,
किसी किसी को भर देता हो,
वाकी को खाली प्याला,
ऐसी मधुशाला से अच्छी,
तो है मेरी चट्शाला।

(२)

नही शिकायत रहे किसी की,
हमे मिले पूरो हाला,
साकी वह, भरपूर पिलाकर,
करे प्रेम से मतवाला,
दीन धनो हिन्दू-मुस्लिम सब,
बन प्रेमी पीवें प्याला,
उन्नति करती बनी रहे,
आजाद-हिन्द की मधुशाला।

(३)

अहो निरंतर आगे बढती,
हिन्दी है मेरी हाला,
आंगल-भाषा, उर्दु-फारसी,
का भी पी देखा प्याला,
व्हिस्कि, ब्रान्डी और विक्ट्री,
बना सकी नही मतवाला,
देशी का आनन्द मिला, जहाँ,
वह हिंदी की मधुशाला ।

(४)

नित-नित जलते अरमानो की,
होली है मेरी हाला,
जिनको पीकर गम से मै,
मन मार बैठता मतवाला,
थोडा-थोडा, नियमानुकूल,
ओ घूंट-घूंट पीता प्याला,
आखिर तो वह धधक उठेगी,
मतवाले की मधुशाला ।

किस की कुर्सी ?

[बग-बधु राष्ट्रपति श्री मुजीबुरहमान के पाकिस्तान से
होकर पुन अपने स्वतन्त्र बगला देश मे पहुँचने के पश्चात् अब
कविता पर कोई टिप्पणी की आवश्यकता नही रह गई है ।

पाठक गण के समक्ष सारी तस्वीर उभर कर साफ सु
सामने आ चुकी है । —०— स०म

किस की कुर्सी काबिज कौन ?
बोल कवि क्यो साधे मौन !

[१]

किस की कुर्सी काबिज कौन ?
किस का डेरा काबिज कौन ?
किस की भूमि काबिज कौन ?
किसकी जनता काबिज कौन ?
बोल कवि, क्यो साधे मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

[२]

तेरी कुर्सी काबिज जालिम
तेरा डेरा काबिज जालिम
तेरी भूमि, काबिज जालिम
तू भोला है, वह है जालिम
भला अभी रहने मे मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

[३]
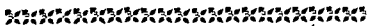
तू, बाटी सेके कडे से
वह सेके हथकण्डे से
सबको हांके डण्डे से
साथ लिए मुसटण्डे से
चुप्पी साधे, रहजा मौन !
सोच समझ कवि, रहता मौन ।

[४]

अभी नहीं कुछ मुंह से बोल !
बन्द पड़ा तरकस ना खोल !
नही बजा तू अपने ढोल !
अपने आप खुलेगी पोल
तभी तोडना अपना मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

(५)

जब टाइम आयेगा तेरा
बजे जीत का डका तेरा
तभी बधेगा तेरे सेहरा
भूमी होगी, डेरा तेरा
तभी बदलना अपनी टोन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

किस की कुर्सी ?

[बंग बंधु राष्ट्रपति श्री मुजीबुरहमान के पाकिस्तान से रिहा होकर पुन अपना स्वतन्त्र बंगला देश म पहुँचने के पश्चात् अब इस कविता पर कोई टिप्पणी की आवश्यकता नही रह गई है।

पाठक गण के समक्ष सारी तस्वीर उभर कर साफ सुथरी सामने आ चुकी है। —०— स०म०]

किस की कुर्सी काबिज कौन ?
बोल कवि क्यों साधे मौन !

[१]

किस की कुर्सी काबिज कौन ?
किस का डेरा काबिज कौन ?
किस की भूमि काबिज कौन ?
किसकी जनता काबिज कौन ?
बोल कवि, क्यो साधे मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन।

[२]

तेरी कुर्सी काबिज जालिम
तेरा डेरा काबिज जालिम
तेरी भूमि, काबिज जालिम
तू भोला है, वह है जालिम
भला अभी रहने मे मौन !
सोच समझ कवि रहता मौन।

[३]

तू, वाटो सेके कडे से
वह सेके हथकण्डे से
सवको हाँके डण्डे से
साथ लिए मुसटण्डे से
चुप्पी साधे, रहजा मौन ।
सोच समझ कवि, रहता मौन ।

[४]

अभी नहीं कुछ मुंह से बोल ।
वन्द पडा तरकस ना खोल ।
नही वजा तू अपने ढोल ।
अपने आप खुलेगी पोल
तभी तोडना अपना मौन ।
सोच समझ कवि रहता मौन ।

(५)

जव टाइम आयेगा तेरा
बजे जीत का डका तेरा
तभी वधेगा तेरे सेहरा
भूमी होगी, डेरा तेरा
तभी वदलना अपनी टोन ।
सोच समझ कवि रहता मौन ।

(६)

तेरी कुर्सी तुझे मिलेगी
तब फिर तेरी दाल गलेगी
तेरी नावें फेर चलेंगी
तेरी चुप्पी तभी फलेगी
तेरा होगा पूरा जोन !
सोच समझ कवि रहता मौन ।

(७)

किसकी कुर्सी काबिज कौन ?
किसका डेरा काबिज कौन ?
किसकी भूमि, काबिज कौन ?
किसकी जनता काबिज कौन ?
बोल कवि, क्यों रहता मौन ।
सोच समझ कवि रहता मौन ।

जमाने के साथ बदलो

—०—

[गद्य कविता]

—०—

जमाना तेजी के साथ बदल रहा है,
जमाने के साथ बदलो,
वरना,
जमाना तुम को बदल देगा,
और
तुम्हारी हुकूमत का
पटिया गोल कर देगा !
और तुम,
गिरेबान मे मुह छिपा कर,
दुम दबा कर, जान बचा कर,
पूर्वी या पश्चिमी गोलार्द्ध के,
किसी देश मे फरार हो जाओगे
और
अपने कुकृत्यो पर पश्चात्ताप,
एव
पापो का प्रायश्चित्त करते हुए,
हिटलर को तरह,
कही आत्म-घात करके मर जाओगे।

पट-परिवर्तन

[१]

दुधारु धैंन

भुट्टोजी बोलन लगे,
मीठे मीठे बैन ।
"लात खाय पुचकारिये,
होय दुधारु धैंन" ॥
पिण्डी को अब चाहिए,
भिण्डी, चावल, धान ।
बगला से अब कह रहे,
भूलो सब अपमान ॥

[२]

याहया जी कैद है तो,
शेखजी आजाद है ।
पाक का यह कैदखाना,
रहता जिन्दाबाद है ॥

कलदार का चमत्कार

[१]

राम करे ऐसा हो जाये
एक नोट के दो बन जायें
दो नोटो के नौ बन जाये
नौ नोटो के सौ बन जायें
सौ के बस दो सौ बन जायें
दो सौ के नौ सौ बन जायें
नौ सौ के, नौ सौ हज्जार
हो जायेगा बेडा पार।

[२]

मात-पिता खुश हो जायेंगे
भाई-बहन भगे आयेंगे
काकी मामी जग जायेंगी
लल्ला कह कर बुलवायेंगी
पडौसिनें दौडी आयेंगी
डट कर के चावल खायेंगी
घर म घी के दीप जलेंगे
सब के मन के फूल खिलेंगे।

[३]

पत्नी के तो मजे रहेगे
पीहर-वाले सजे रहगे
धमा चौकडी जमी रहेगी
मेरे तो यह कमी रहेगी
अप टू डेट कहा से लाऊ
किस के सग घूमने जाऊ
किसके सग सिनेमा जाऊ
होटल मे किसके सग खाऊ।

[४]

वातावरण बदल जायेगा
स्वग धरा पर आ जायेगा
मित्रो की तो खूब बनेगी
हरी-हरी बस रोज छनेगी
बाग बगीचे सैर करगे
सिनेमा, पग-फेर करेंगे
रोज रोज नौरोज चलेंगे
माल मलीदे रोज मिलेंगे।

[५]

बाजारो मे धाक् जमेगी
पत्रो मे तस्वीर छपेगी
रेस्ट्रा और बार चलेगी
एम्बेसेडर कार चलेगी
मेरे आका काल करगे
सस्पेन्शन से बहाल करेंगे
सभी मुकद्दमे वापिस होगे
मेरे वस मे आफिस होग।